Topic 46

अजन्त पुँल्लिंग 'घि' संज्ञक इकारन्त, उकारन्त शब्द।

जसि च

ह्रस्वान्तस्याङ्गस्य गुणः। हरयः।

ह्रस्वस्य गुणः।

सम्बुद्धौ। हे हरे! हरिम्। हरीन्।

शेषो घ्यसखि।

शेष इति स्पष्टार्थम्। अनदीसञ्ज्ञौ ह्रस्वौ याविदुतौ तदन्तं सखिवर्जं घिसंज्ञम्।

नदी संज्ञा दो अवस्थाओं में नहीं होती है — (1) पुँल्लिंग में ह्रस्व इकारन्त और ह्रस्व उकारन्त शब्द नदीसंज्ञक नहीं होते, जैसे हरि, भानु, गुरु आदि। (II) स्त्रीलिंग में ङित् विभक्तियों के परे होने पर जिस पक्ष में ङिति ह्रस्वश्च द्वारा नदी संज्ञा नहीं होती है। अतः इन दो स्थलों पर ही 'घि' संज्ञा प्राप्त होती है, उदाहरण के लिए 'हरि' शब्द की नदी संज्ञा नहीं हुई, अतः इसकी 'घि' संज्ञा होगी।

आङो नाऽस्त्रियाम्।

घेः परस्याङो ना स्यादस्त्रियाम्। आङ् इति टासंज्ञा। हरिणा। हरिभ्याम्। हरिभिः।

घेर्ङिति।

घिसंज्ञकस्य ङिति गुणः। हरये।

ङसिङसोश्च।

एङो ङसिङसोरति पूर्वरूपमेकादेशः। हरेः २। हर्योः। हरीणाम्।

अच्च घेः

इदुद्भ्यामुत्तरस्य ङेरौत्, घेरत्। हरौ। हर्योः। हरिषु। एवं कव्यादयः।